Reg No 177/2008-2009 ISSN: 2322–0317

PSSH PERSPECTIVE of SOCIAL SCIENCES and HUMANITIES

An International Multidisciplinary Refereed Research Journal

VOL 2, NO 2

JULY - DECEMBER 201

Biannual

Editor

Dr Hemant Kumar Singh

Assistant Professor

Economics Department

Madan Mohan Malviya PG College

Deoria (UP)

Publisher

Herambh Welfare Society

Varanasi (India)

जॉन डीवी एवं स्वामी विवेकानन्द के शिक्षा-दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन तथा उसका इक्कीसवीं सदी की शिक्षा पर प्रभाव

डॉ० (श्रीमती) शुभ्रा श्रीवास्तव[1]

भारत अपनी सभ्यता, संस्कृति, कला दर्शन के गौरवपूर्ण अतीत पर गर्व करता रहा हैं। भारतीय दर्शन आध्यात्मिकता, नैतिकता, धार्मिकता एवं वास्तविकता का अन्वेषण है जिसमें बौद्धिक उड़ान के उत्कृष्ट नमूने हैं तर्क प्रणाली की चरम परिणिति है तथा चिन्तन, मनन के आधार पर सिद्धान्तों को विकसित करके शिक्षा के माध्यम से जनसाधारण तक व्यावहारिक रूप में पहुँचाने का कार्य किया गया है।

वर्तमान में हमारी परम्परा, अतीत की अवहेलना, मूल्य संकट, बेरोजगारी एवं आर्थिक संकट जैसी समस्याओं से प्रभावित होती दिखाई पड़ रही है। अतः अपनी सभ्यता एवं संस्कृति की रक्षा हेतु लोकतंत्रीय परम्परा के अनुरूप शिक्षा प्रदान करना आवश्यक हो गया है। आज शिक्षा के ऐसे सार्थक स्वरूप की आवश्यकता हैं जिससे युवा पीढ़ी के व्यवहार आचरण में नैतिक चारित्रिक मूल्यों को समावेशित कर अनुभवजन्य क्रियाशील ज्ञान के द्वारा तकनीकी, कौशल, विशिष्टता युक्त जनशक्ति निर्मित कर, आत्मनिर्भर बनाने के साथ, स्वस्थ दृष्टिकोण का विकास करके, उसे समाज का उत्तरदायी घटक बनाया जा सकें। जिससे युवा पीढ़ी समाज की सर्वांगीण उन्नति में अपनी शक्ति का उत्तरोत्तर प्रयोग करने की भावना से ओत–प्रोत हो सके।

विश्व के महान दार्शनिकों ने अपने विचारों से मानव समाज को प्रभावित किया किन्तु आधुनिक जगत में जॉन डीवी के शिक्षा सम्बन्धी विचारों ने सभी देशों की शिक्षा व्यवस्था को पूर्णतः प्रभावित किया है। डीवी द्वारा दिये गये जनतांत्रिक शिक्षा सम्बन्धी सुझाव और अनुभव तथा प्रयोग पर आधारित ज्ञान वर्तमान परिवेश की आवश्यकता तो बन गये है, साथ ही भविष्य में अध्ययन हेतु भी महत्वपूर्ण होगें।

डीवी का शिक्षा–दर्शन प्रमुखतः प्रयोजनवादी विचारधारा पर आधारित है जिसे उपयोगितावाद, व्यवहारवाद भी कहा जाता है साथ ही उसमें आदर्शवाद एवं प्रकृतिवाद का समन्वय भी दर्शित है। डीवी ने अपने विचारों

[1] व0 प्रवक्ता, बी0एड0 विभाग, दिग्विजयनाथ पी0जी0 कालेज, गोरखपुर

को व्यावहारिक रूप प्रदान करने के लिये प्रयोगशाला विद्यालय की स्थापना 1896 में की जिसे स्थापित करने का उनका यह प्रयोजन था कि वे दर्शन एवं मनोविज्ञान तथा शिक्षा के सभी विषयों में ऐसा सम्बन्ध स्थापित करें जैसा कि विज्ञान की विभिन्न शाखाओं का सम्बन्ध प्रयोगशाला में होता है, जिसके दो प्रमुख सिद्धान्त थे–

1. सक्रिय सीखना 2. अनुभव का पुनः निर्माण

डीवी आध्यात्मिक संसार में विश्वास न करते हुए मानव को सामाजिक प्राणी मानते हुए उसे इसी संसार के लिये तैयार करना चाहते थे। उनका मानना था कि नये–2 भौतिक मूल्यों की खोज से ही मानव जीवन सुखमय बनता हैं। वह मानव को रोटी, कपड़े और मकान की समस्या को हल करने के साथ–2 मानव को उसकी सामाजिक समस्याओं हेतु भी तैयार करना चाहते हैं। डीवी के अनुसार ''शिक्षा की प्रक्रिया अनुभवों की वृद्धि एवं संशोधन हैं।'' शिक्षा व्यक्ति की कुशलता बढ़ानें के साथ–2 उन अनुभवों के सामाजिक मूल्यों को बढ़ाने में उत्तरोत्तर सहायता करती है।

डीवी ने शिक्षा को पूर्णरूपेण सामाजिक प्रक्रिया मानते हुए उसके दो आधारों को निर्धारित किया, व्यक्तिगत और सामाजिक। उनका मानना था कि व्यक्ति को उसकी रूचियों, शक्तियों को ध्यान में रखकर शिक्षा तो देनी चाहियें किन्तु साथ ही साथ उसकी समस्त शक्तियों, रूचियों आदि को सामाजिक मूल्य देना है। बालक की शक्तियों एवं रूचियों का वास्तविक मूल्य वही है जो समाज उन्हें देता है।

डीवी महोदय ने शाश्वत मूल्यों में विश्वास न करते हुए उसी को सत्य माना, जिसकी व्यावहारिक जीवन में उपयोगिता हों। उनके अनुसार शिक्षा का कोई उद्देश्य है तो वह यही है कि उसके द्वारा मानव में ऐसे गुणों एवं क्षमताओं का विकास किया जाये जिससे वह अपने वर्तमान जीवन को कुशलतापूर्वक जी सके तथा भावी जीवन का मार्ग प्रशस्त कर सके। अतः डीवी समाज के सभी कार्यो में कुशलतापूर्वक भाग लेने के लिये एक व्यक्ति में निम्न गुणों का होना आवश्यक मानते हैं– ''स्वास्थ्य, क्रिया करने की क्षमता योग्य गृहस्थ, व्यवसाय नागरिकता, अवकाश काल का समुचित सदुपयोग तथा नैतिकता एवं चरित्र। ''उनके विचारानुसार शिक्षा को बालक में ऐसी क्षमता उत्पन्न करनी चाहियें जिससे वह सामाजिक परिस्थिति का सामना डट कर कर सके और संघर्ष में सफलता प्राप्त कर सके।

शिक्षा को व्यवसाय से जोड़ना और जीवन से जोड़ना ही प्रगतिशील शिक्षा का उद्देश्य है। अतः व्यावहारिक उपयोगिता के विभिन्न व्यावसायिक पाठ्यक्रमों द्वारा युवा पीढ़ी में कौशल निर्माण की प्रक्रिया को प्रोत्साहित किया जायें जिससे कि व्यैक्तिक एवं सामाजिक विकास की संभावनाओं को उचित दिशा प्राप्त हो सकें।

डीवी ने परम्परागत पाठ्यक्रमों को दूषित बताते हुए इस बात पर यह बल दिया कि पाठ्यक्रम कृत्रिमता से दूर बच्चों के वास्तविक जीवन की क्रियाओं पर आधारित गतिशील लचीला एवं उपयोगी होना चाहियें जिसे निर्मित करने में बालक की मनोवैज्ञानिक स्थिति के साथ सामाजिक स्थिति विषय एवं क्रियाओं की उपयोगिता पर बल दिया जाना चाहियें। डीवी महोदय

प्रेम, सहानुभूति, सहयोग, समायोजन एवं सामुदायिक जीवन जैसी भावनाओं के विकास को शिक्षा का कार्य मानते थें। राष्ट्र निर्माण कक्षाओं में होता है, अतः विद्यालय सामाजिक समस्याओं को परावर्तित करें और युवा पीढ़ी की तात्कालिक आवश्यकताओं की पूर्ति करे, विद्यालय समाज का लघु रूप बने, लोकतंत्र के जीवित उदाहरण बनें। आज युवा पीढ़ी में समानता, सामाजिक न्याय, समाजवाद, सहयोग, समायोजन, सर्वधर्मसमभाव, आत्म अनुशासन, संवेदनशीलता, सामुदायिक जीवन, भ्रातृत्व भावना एवं मानवाधिकारों के मूल्यों को प्रतिष्ठित करने के लिये लोकतांत्रिक दृष्टिकोण का विकास आवश्यक है जो इक्कीसवीं सदी की शिक्षा हेतु विशेष रूप से उपयोगी है।

डीवी का मानना था कि शिक्षक का कार्य छात्रों को सूचनायें ज्ञान प्रदान करना नहीं है वरन उनके लिये ऐसी स्थिति या अवसरों को प्रदान करना है, जो उन्हें सीखने में सहायता प्रदान करती है। अतः डीवी ने शिक्षा में क्रियात्मक पद्धति प्रगतिशील, क्रिया प्रधान पाठ्यक्रम, व्यैक्तिकता एवं सामाजिकता का समन्वय, योजना पद्धति का आरम्भ किया जिसका अनुकरण आज भी किया जा रहा है।

प्रो0 वागले ने डीवी के प्रभाव पर प्रकाश डालते हुए लिखा है, ''शिक्षा सम्बन्धी महान नेतृत्व जिसका संपादन डीवी ने 40 वर्षो से अधिक तक किया है। वह अत्यन्त गरिमापूर्ण है। शिक्षा के क्षेत्र में उसके नेतृत्व ने स्वराष्ट्र की संकुचित सीमाओं को तोड़ कर विश्वव्यापी प्रभाव स्थापित किया। वह सच्चे अर्थो में शिक्षा नायक थे।''

भारत भूमि महापुरूषों की जन्मदात्री रही है जिसकी धरती पर ऐसे महामानवों ने जन्म लिया जिनके प्रभामण्डल से निकली ज्ञान की ज्योति ने संपूर्ण विश्व को आलोकित उन्ही महामानवों में वह सुन्दर आकर्षक व्यक्तित्व जिसने शिकागो के धर्म संसद में अपने व्याख्यानों से विश्व को सम्मोहित किया, अभिभूत किया, जिसने मानवतावादी धर्म का पाठ पढ़ाया और भारत को पुनः जग्दगुरू के रूप में प्रतिष्ठित किया वह युग पुरूष थे स्वामी विवेकानन्द। स्वामी जी पाश्चात्य देशों के लिये भारत के आध्यात्मिक राजदूत थे तो भारत के लिये पश्चिमी विज्ञान के प्रणेता। वह एक महान दार्शनिक विचारक युगदृष्टा, शिक्षाशास्त्री, निर्माणकर्ता, संगठनकर्ता, आदर्शजनसेवी एवं शक्ति के अप्रतिम संदेशवाहक थे। स्वामी जी का वेदान्त दर्शन समन्वयवादी शिक्षा–दर्शन है जिसमें आदर्शवाद, प्रकृतिवाद, प्रयोजनवाद यथार्थवाद एवं मानवतावाद रूपी विचारधाराओं का समन्वय दर्शित है। स्वामी जी अतीत एवं वर्तमान के बीच एक प्रकार के संयोजक थे जिन्होंने शिक्षा–दर्शन को व्यापक रूप प्रदान किया।

स्वामी जी ने शिक्षा को व्यापक एवं व्यावहारिक रूप प्रदान करते हुए शिक्षा को मानव निर्माण प्रक्रिया, राष्ट्र निर्माण प्रक्रिया माना है जिसके द्वारा मानव की संकल्पित शक्ति के प्रवाह को प्रभावी बनाया जाता है। शिक्षा व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करती है, चरित्र गठन करती है, मन का बल बढ़ाती है, बुद्धि का विकास करके, मानव को स्वावलंबी बनाती है। उनका

मानना था कि शिक्षा का उद्देश्य केवल पुस्तकें पढ़ना ही नही अपितु मानव को मानव बनाना है। उन्होनें कहा, मेरे नौजवान दोस्तों, बलवान बनों तुम्हारे लिये मेरी यही सलाह है तुम भगवद्गीता की अपेक्षा फुटबाल खेलकर कहीं अधिक सुगमता से मुक्ति प्राप्त कर सकते हो। स्वामी जी ने शिक्षा द्वारा मानव में, युवा पीढ़ी में योग्यता, कुशलता, दक्षता, प्रवीणता, मानवीय मूल्य, एकाग्रता, स्वावलंबन, आत्मनिर्भरता, संयम, मौलिकता चितंन आदि को प्रतिष्ठित करने पर जोर दिया।

स्वामी जी के बारे में गुरूदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर ने कहा, ''यदि आप भारत को समझना चाहते हैं तो विवेकानन्द का अध्ययन कीजिये उनमें सब कुछ सकारात्मक है नकारात्मक कुछ भी नही।'' इन दो वाक्यों के माध्यम से गुरूदेव ने आधुनिक भारत के निर्माण में स्वामी जी की प्रासंगिकता की घोषणा कर दी। स्वामी जी का मानना था कि आध्यात्मिक उन्नति के पूर्व देश की भौतिक उन्नति एवं समृद्धि आवश्यक हैं। रोटी का प्रश्न हल किये बिना भूखे मनुष्य धार्मिक नही हो सकतें। अतः रोटी का प्रश्न हल करने का नया मार्ग बताना सबसे मुख्य एवं पहला कर्तव्य है।

स्वामी जी ने व्यष्टि में समष्टि का समन्वय किया। उनका मूलमंत्र था सहायता न कि विरोध, दूसरों के भावों को आत्मसात करना न कि विनाश, समन्वय और शांति न कि कलह। उन्होंने युवा शक्ति को प्रेरित करते हुए कहा, मरते दम तक कार्य करते रहो। आगे बढ़ों, भारत के नवनिर्माण हेतु युवाशक्ति, भारतवासियों को यह मंत्र सदैव याद रखने को कहा ''उठो जागो और लक्ष्य प्राप्ति के बिना विश्राम मत लो।''

स्वामी जी ने एक पूर्ण मानव की शिक्षा के प्रारूप पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा, मैं ऐसा धर्म चाहता हूँ जो हर व्यक्ति को अन्न, वस्त्र, शिक्षा देने के साथ–2 उन्हें अपने सभी दुख दूर करने की शक्ति प्रदान करें। सबकों मिलकर देश की दरिद्रता तथा अज्ञानता दूर करनी चाहियें। उन्होंने भारतीय आध्यात्मिक शिक्षा के पुनर्जागरण के साथ–2 पाश्चात्य जगत की वैज्ञानिक एवं तकनीकी शिक्षा की महत्ता को भी स्वीकार किया जिससे युवा वर्ग को आत्मनिर्भर बनाया जा सके। वे लौकिक पाठ्यक्रम द्वारा भारतीय जनमानस की आवश्यकताओं को पूर्ण करना चाहते थें। वहीं अलौकिक पाठ्यक्रम द्वारा मानव को आध्यात्म द्वारा जोड़ना चाहते थे।

युवा जीवन के प्रेरणा स्तम्भ स्वामी जी ने युवाओं को मूलमंत्र देते हुए कहा था 'बनो और बनाओं' (Be and Make), स्वामी जी का यह मूल मंत्र आज भी युवा शक्ति को, मानव को अमूल्य राष्ट्रीय संसाधन के रूप में विकसित करने हेतु प्रेरित महामंत्र की भाँति हैं। आज यदि युवा पीढ़ी संवेदनायुक्त होकर अपने अंदर यह भावना निहित कर ले कि मुझे अपने साथ–2 दूसरों के विषय में भी सोचना है, जिससे अन्य लोग भी कामयाबी की ओर अग्रसर हों। यह वही भावना है जो मानव को मानव से जोड़ती है, मानव में मानव के प्रति विश्वास उत्पन्न करती है और मानव को मानव बनाती है।

स्वामी जी ऐसे गुरूओं के पक्ष में थे जिनके जीवन का सिद्धान्त ''आत्मनो मोक्षार्थ जगद्धिताय च'' हो। ऐसे गुरूओं के सानिध्य में छात्रों का

विकास उसी भाँति होता है जैसे बसन्त ऋतु पेड़–पौधों और लताओं में नया जीवन डाल देती है वे हरे भरे नयें कोपलयुक्त हो जाते हैं।

स्वामी जी के विचारों में प्राचीन एवं आधुनिक विचारों का समन्वय दर्शित होता है नारी शिक्षा, जनशिक्षा, व्यवसायिक शिक्षा एवं भाषा सम्बन्धी उनके विचार अमूल्य एवं सामयिक हैं। स्वामी जी द्वारा प्रतिपादित शिक्षा–दर्शन एक उच्च कोटि का शिक्षा–दर्शन है जो न केवल मनुष्य के शारीरिक, सामाजिक, धार्मिक, चारित्रिक आध्यात्मिक विकास का आधार स्वरूप है वरन राष्ट्रीय एकता, अन्तर्राष्ट्रीय एकता शांति, सांस्कृतिक सद्भाव को भी दिशा प्रदान करता है।

आधुनिक युग वैज्ञानिक सम्यता संस्कृति का युग हैं। आज दुनिया भर में विश्व संस्कृति, विश्व समाज के नारे जोर शोर से दिये जा रहे हैं। आज इलेक्ट्रानिक संचार ने सम्पूर्ण संसार को एक सूत्र में बांध दिया है जिसने सारी दुनिया को एक छोटा सा गाँव बना दिया है। इस संचार क्रांति के युग में दूरस्थ शिक्षा तकनीकी से भौगोलिक दूरियां मिट गई। यांत्रिकीकरण ने जहाँ भौतिक सुख–सुविधाओं में बढ़ोत्तरी की वहीं मानवीय रिश्ते, भावना, संवेदनशीलता जैसी चीजे व्यक्ति के बीच से गायब होती जा रही हैं। नैतिक सामाजिक संदर्भो में आज हम दिवालिया हो चुके हैं। वर्तमान परिवेश में राष्ट्र के समक्ष एक ओर जहाँ मूल्य संकट, बेरोजगारी जैसी गम्भीर चुनौतियाँ है वहीं भ्रष्टाचार, आत्मकेंद्रित प्रवृत्ति, सांप्रादायिकता, अनुशासनहीनता, कर्त्तव्यहीनता, आतंकवाद, भाई भतीजावाद, सत्ता हेतु स्वार्थपूर्णनीतियां तो आज राष्ट्र जीवन का अभिन्न अंग बन गई है,। आज संवेदनहीनता का आलम यह है कि पढ़े लिखे माता–पिता, डॉक्टर तथा अन्य संभ्रात व्यक्ति बालिकाओं को जन्म देने से रोक रहे हैं। निश्चित ही उनकी शिक्षा में संवेदनशीलता की मानवीय मूल्यों की कमी हैं। वो युवा जो पहले कुछ देने हेतु तत्पर रहते थे आज स्वयं रख लेने में विश्वास कर रहा हैं। जिस युवा पीढ़ी पर भारत के भविष्य को सजाने संवारने की जिम्मेदारी है, वही आज अवसाद के दौर, तनाव, कुण्ठा, आक्रोश की भावना से ग्रस्त तथा भविष्य के प्रति आशंकित नजर आती है, जो चिंतनीय है आज मानव में विद्यमान बढ़ती हुई आसामाजिक, अपराधिक एवं हिसांत्मक प्रवृत्ति यह दर्शित करती है। कि उसका शैक्षिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास होने के बावजूद उसमें अभी बहुत प्रतिशत तक पशुता की प्रवृत्ति विद्यमान है। आज यदि मानव को बचाना है तो डीवी एवं स्वामी विवेकानन्द द्वारा बतायें गये मार्ग पर चलकर उनके विचारों एवं मूल्यों को आत्मसात कर उसे व्यवहार एवं आचरण में प्रतिष्ठित करना होगा। उनका सही ढंग से मार्गदर्शन करना होगा।

इक्कीसवीं सदी जो ज्ञान सूचना, संप्रेषण, तकनीकी, विशिष्टीकरण की सदी है जहाँ नित नवीन सूचनाओं के सतत प्रवाह के साथ अनेक चुनौतियाँ शैक्षिक क्षेत्र में विद्यमान हैं। यूं तो स्वतंत्रयोत्तर भारत में शिक्षा का प्रसार तीव्रता से हुआ, प्राथमिक विद्यालयों से लेकर विश्वविद्यालय तक के सभी स्तरों में शिक्षण संस्थाओं में भारी वृद्धि हुई किन्तु मात्रात्मक दृष्टिकोण से

प्रसार के साथ गुणवत्ता रूपी भारी क्षति भी आज इसी क्षेत्र को हुई है। शिक्षा जो किसी भी राष्ट्र की प्राणवायु, उसकी प्रेरणा, उसकी ऊर्जा है। किसी भी राष्ट्र का भविष्य उसके द्वारा हासिल किये गये शैक्षिक स्तर पर निर्भर करता है। वर्तमान में प्राथमिक शिक्षा जो नीवं है, कि स्थिति से लेकर उच्च शिक्षा रूपी इमारत की स्थिति गम्भीर है। आज प्राथमिक शिक्षा का विस्तार, सार्वभौमिकरण, व्यवसायीकरण गुणवत्ता, उद्देश्यहीनता, बोझिल पाठ्यक्रम, क्रियात्मकता व सृजनात्मकता का अभाव, अंग्रेजी शिक्षा के प्रति व्यामोह, मंहगी शिक्षा, मूल्याकंन प्रणाली व पाठयक्रम में एकरूपता की कमी, अपव्यय अवरोधन जैसी तमाम समस्यायें हमारे समक्ष हैं। वह प्राथमिक शिक्षा जहाँ दो तरह की सरकारी व पब्लिक शिक्षण संस्थायें विद्यमान हैं जो बच्चों के भविष्य से खिलवाड़ कर रही है। पब्लिक शिक्षण संस्थायें जो पाश्चात्य संस्कृति, मूल्यों को परोस रही हैं वही सरकारी संस्थानों में शिक्षा प्राप्त कर रहे छात्रों को गणित हिन्दी, अंग्रेजी का अपेक्षित ज्ञान भी नही होता। साथ ही ग्रामीण व शहरी परिवेश की शिक्षा का प्रभाव भी स्पष्टतः परिलक्षित है।

इसी प्रकार वह भारत जिसके माथे की बिन्दी हिन्दी भाषा को माना जाता है उसकी स्थिति आज क्या है? किसी से छिपी नहीं है। विदेशी वस्तुओं की होली जलाने वाले देश में आज हम विदेशी वस्तुओं का प्रयोग करने में अपने को गौरवान्वित महसूस करतें हैं। एक ओर जहाँ हम बच्चों के बस्ते के बोझ को कम करने की बात करते हैं वहीं दूसरी ओर चाहते हैं कि हमारे बालक जल्द से जल्द प्रत्येक क्षेत्र मे ंनिपुणता हासिल कर लें अपने मस्तिष्क में ज्ञान को कम्प्यूटर, मीडिया के माध्यम से जल्द से जल्द समेट लें। आज बच्चों का नैसर्गिक बचपन तनाव का बचपन बनता जा रहा है। यही हाल कमोवेश माध्यमिक एव उच्च शिक्षा का है जहाँ वित्त पोषित, स्ववित्तपोषित शिक्षण संस्थाओं की गुणवत्ता के साथ नकल माफियाओं के मकड़जाल ने पूरी व्यवस्था को प्रभावित किया है। हालांकि सरकार द्वारा गुणवत्ता अभिवृद्धि हेतु विभिन्न समस्याओं से निपटने हेतु कदम उठायें जा रहे हैं जिसमें 6–14 वर्ष तक के बच्चों हेतु अनिवार्य निः शुल्क शिक्षा को मौलिक अधिकार का दर्जा दिया जाना, उत्कृष्टता केन्द्र की स्थापना राष्ट्रीय ज्ञान आयोग की स्थापना एक शुभ कदम है। वैश्विक स्तर पर एक प्रतियोगी के रूप में उभरने के लिये किसी देश की क्षमता मूलतः ज्ञान संसाधन पर ही निर्भर करती है। आज क्रमिक ज्ञान को प्रोत्साहित करने हेतु ऐसा बदलाव आवश्यक है जो समूचे ज्ञान क्षेत्र की समस्याओं की ओर ध्यान दे। अतः आज आवश्यकता हैः–

1. ज्ञान की सुलभता को बढ़ाना।
2. शिक्षा प्रणाली एवं उसकी आपूर्ति में बुनियादी सुधार करना।
3. अनुसंधान विकास एवं नवाचारी संस्थाओं को नया रूप देना।
4. बेहतर सेवायें उत्पन्न करने के लिये ज्ञान अनुप्रयोगों का लाभ उठाना।

आज उच्च शिक्षा को छात्र केंद्रित एवं ध्यायोन्मुखी बनाना होगा साथ ही किसी भी देश के विकास को परखने का तौलने का मानक यह भी है कि हम पता लगायें कि हमने कितने नवीन शब्दों की रचना की। आधुनिक विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में नये शब्दों की रचना का अधिकार उसके मूल खोजकर्ता को ही जाता है। उदाहरण के तौर पर सर सी0वी0 रमन द्वारा

खोजा गया रमन इफेक्ट। हम नित नये शब्दों जैसे नैटीजन, नैनोटेक्नोलोजी आदि का आयात तो कर रहें किंतु नये शब्दों की रचना करने में अभी भी बहुत पीछे हैं। अतः हमें अपने शोध स्तर की गुणवत्ता में वृद्धि करते हुए इसे विश्व स्तर का बनाना होगा।

आज शिक्षक को अपनी शक्ति ऊर्जा का उपयोग करके छात्रों को इस प्रकार से प्रोत्साहित करना होगा कि वे स्वप्रयास से खोजे, ज्ञान अर्जित करें। छात्रों में ज्ञान के प्रति रूचि उत्पन्न करने के साथ ही उन्हें अपने मस्तिष्क को अद्यतन एवं ताजा रखना होगा। आज शिक्षक के मन में राष्ट्रीय बोध, नागरिकता का बोध भरना होगा जिससे वह स्वयं से कह सके, ''मैं मात्र वेतन भोगी नागरिक नहीं हूँ, मैं भाड़े का टट्टू नहीं हूँ, मैं एक नागरिक हूँ। मेरे सामने बैठे ये बच्चे मेरे उदीयमान सहनागरिक हैं मै यहाँ ज्ञान एवं चरित्र का अर्जन करने में उनकी सहायता देने हेतु उपस्थित हुआ हूँ।''

आज डीवी एवं स्वामी विवेकानन्द के शिक्षा–दर्शन में निहित ऊर्जा युक्त विचारों, आदर्शों, मूल्यों जैसे स्वाध्याय, लोकतांत्रिक मूल्य, मानव निर्माण, राष्ट्र निर्माण, संकल्पशक्ति, एकाग्रता, मानव सेवा, समाज सेवा, नैतिक चारित्रिक, शारीरिक, बौद्धिक विकास, आत्मानुशासन, त्याग, योग, संयम, कौशल निर्माण दक्षता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, जागरूकता, सृजनात्मकता, क्रियाशीलता, संकीर्णरूढ़िवादी विचारों को अंत, मानव श्रम महत्ता, राष्ट्रीय एकता, गुरू शिष्य परम्परा, तर्क एवं चिंतनशील प्रवृत्ति, व्यावहारिक तकनीकी ज्ञान, नारी सशक्तिकरण, त्रिभाषा सूत्र, रोजगारपरक शिक्षा व्यवस्था, वसुधैव कुटुम्बकम आदि को शिक्षा व्यवस्था में नीतिबद्ध रूप से निहित कर पुनर्गठित एवं पुनर्संयोजित करके उसे उचित स्वरूप एवं दिशा देकर प्रभावी बनाकर विभिन्न तात्कालिक समस्याओं का समाधान किया जा सकता है।

आज यदि हम राष्ट्रीय शिक्षा नीति या विभिन्न शिक्षा आयोगों के विचारों का सम्यक अध्ययन करे तो पायेगें कि दोनो मनीषियों के विचार उनमें समाहित है। मानवीय व्यक्तित्व भी एक अधखिले पुष्प की भाँति है जिसमें सुप्रबन्ध द्वारा निखार लाया जा सकता है। आज राष्ट्र को विकास की मुख्य धारा से जोड़ने हेतु सर्वशिक्षा अभियान केयर इंडिया, स्कूल चलो अभियान, निःशुल्क पुस्तक, ड्रेस योजना विभिन्न वर्गों हेतु छात्रवृत्ति योजना, मिड डे मील योजना, साक्षर भारत मिशन, राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान, उत्कृष्टता केन्द्र, बालिका शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा, को प्रोत्साहन देने के साथ ही, सतत शिक्षा, ग्रामीण शिक्षा, विज्ञान तकनीकी शिक्षा, मूल्य शिक्षा, पर्यावरण, नैतिक शिक्षा, मानवाधिकार शिक्षा, जनसंख्या शिक्षा, योग शिक्षा, ऊर्जा शिक्षा, कम्प्यूटर शिक्षा जैसे अनेक पाठ्यक्रम के साथ ही विभिन्न पाठ्यक्रमोत्तर क्रिया कलाप, छैए छब्ब जैसे कार्यक्रमों को बढ़ावा देने के साथ ही प्रोजेक्ट वर्क, क्विज, पेंटिग ड्रामा, वाद विवाद, वर्क एसाइन्मेंट, चर्चा, दृश्यश्रव्य सहायक उपकरण के प्रयोग द्वारा रूचिपरक, व्यवहारपरक बनाने का कार्य किया जा रहा है।

आज शिक्षा के ऐसे सार्थक स्वरूप की आवश्यकता है जिससे राष्ट्र के

प्रत्येक युवा को उसकी क्षमता योग्यता अनुरूप विकास की मुख्य धारा से जोड़ा जा सके, जो उसे मात्र चिकित्सक, गणितज्ञ, हृदयहीन, वैज्ञानिक अथवा विविध ज्ञानों का कोष न बनाये वरन उसे मानवीय गुणों से युक्त बनायें। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम रामायण भी पढ़े एवं अणुबम को भी जानें।

वैश्विक स्तर पर शिक्षा की प्रतिस्पर्धा को बनाये रखने शिक्षा स्तर को उच्च गुणवत्तायुक्त बनाने के साथ छात्रों की मानसिकता को सोचने, समझने की आवश्यकता हैं। शिक्षा तथा जीवन के बीच की दूरी कम करते हुए कौशलयुक्त जन शक्ति को निर्मित करने के साथ ही युवा पीढ़ी के कुशल मार्गदर्शन की आवश्यकता है। शिक्षा की गुणवत्ता में अभिवृद्धि तथा उसे अद्यतन बनायें रखने हेतु Head, Heart, Hand, Human Relationship & Highway Information से जुड़ना होगा जैसा कि इन दोनों महापुरूषों के विचारों में निहित है।

इस प्रकार जॉन डीवी एवं स्वामी विवेकानन्द द्वारा प्रतिपादित विचार आज भी उतने ही सामयिक एवं प्रासंगिक हैं जितना कि पहले। उनके द्वारा प्रज्जवलित प्रकाश पुंज शिक्षा जगत को सदैव आलोकित करता रहेगा।

संदर्भ सूची

- अग्रवाल डॉ0 बी0बी0– आधुनिक भारतीय शिक्षा की समस्यायें विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 1997
- अविनाश लिंगम टी0एस0– स्वामी विवेकानन्द की शिक्षा, भास्केश्वरानन्द अध्यक्ष, रामकृष्ण आश्रम, नागपुर, 1971
- ओड, डॉ0 एल0के0– शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि, राजस्थान, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2007
- चौबे डॉ0 एस0पी0 एण्ड चौबे डॉ0 अखिलेश–भारत और पश्चिम के श्रेष्ठ शिक्षा शास्त्री भवदीय प्रकाशन, अयोध्या, 2002
- डीवी0 जान– डेमोक्रेसी एण्ड एजूकेशन, दि बेकन प्रेस, बोस्टन, 1956
- डी0वी0 जॉन– एक्सपीरियेन्स एण्ड एजूकेशन, दि मैकमिलन कम्पनी, 1953
- तरूण हरिवंश– विश्व के महान शिक्षा शास्त्री प्रकाशन संस्थान नई दिल्ली, 2005
- पाल डॉ0 एस0के0 गुप्त, डॉ0 एल0एन0 एण्ड मदन मोहन–महान पाश्चात्य एवं भारतीय शिक्षा शास्त्री, कैलाश प्रकाशन, इलाहाबाद, 2006
- रस्क, आर0आर0– महान शिक्षा शास्त्रियों के सिद्धान्त, यूनिवर्सल बुक डिपों, लखनऊ, 2001
- राजपूत जगमोहन सिंह– क्यों तनावग्रस्त है शिक्षा व्यवस्था, किताब घर प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008
- लाल डॉ0 रमन बिहारी एण्ड तोमर डॉ0 राजेन्द्र सिंह–विश्व के श्रेष्ठ चिन्तक, आर0एल0बुक डिपो, मेरठ, 2007
- वर्मा आर0बी0 एस0 तथा सिंह अतुल प्रताप–मानव संसाधन विकास एवं प्रबन्धन की रूपरेखा, न्यू रायल बुक कम्पनी, लखनऊ, 2005
- स्वामी विवेकानन्द– भारत का भविष्य, प्रकाशक स्वामी, ब्रहस्थानन्द रामकृष्ण आश्रम धन्तोली, नागपुर, 2004
- स्वामी विवेकानन्द– शिक्षा के विविध आयाम स्वामी विवेकानन्द का शिक्षा–दर्शन, प्रकाशक अरूण प्रकाशन मानसरोवर पार्क नई दिल्ली, 2006

- स्वामी विवेकानन्द– भारत और उसकी समस्यायें, संकलक, स्वामी निर्वेदानन्द रामकृष्ण मठ धन्तोली नागपुर (2005)
- स्वामी विवेकानन्द– शिक्षा रामकृष्ण मठ धन्तोली नागपुर, 1996
- स्वामी विदेहानन्द– स्वामी विवेकानन्द और उनका अवदान, प्रकाशक स्वामी बोधसारा नन्द, अद्वैत आश्रम मायावती चंपावत उत्तराखण्ड, कोलकाता स्थित प्रकाशन विभाग द्वारा, 2008